ISSN: 3108-0294

आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका

अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित (PEER- REVIEWED) शोध-पत्रिका

खंड -1, अंक-2, अक्टूबर-मार्च 2025-26

प्रधान संपादक
प्रो. आशा शुक्ला

संपादक
प्रो. आर.के.शुक्ला

उप-संपादक
डॉ. रामशंकर

प्रबंध संपादक
लव चावड़ीकर

प्रकाशक
आशा पारस फॉर पीस एंड हारमनी फाउंडेशन, भारत
A93, एमराल्ड पार्क सिटी, एम्स अस्पताल के पास, बागसेवनीया, भोपल-462026, मध्य प्रदेश
officeparasfoundation@gmail.com
www.ashaparasfoundation.com

ALL RIGHTS RESERVED COPY RIGHT

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-1, अंक-2 अक्टूबर-मार्च, 2025-26, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

संपादक मण्डल

प्रधान संपादक	संपादक
प्रो. आशा शुक्ला प्रबंध निदेशक, आशा पारस फॉर पीस एंड हारमनी फाउंडेशन, भारत एवं पूर्व कुलगुरु, डॉ. बी. आर. अंबेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय, महू इंदौर, मध्य प्रदेश ashashukla2006@yahoo.co.in +91 9926310987	**प्रो. आर. के. शुक्ला** निदेशक, आशा पारस फॉर पीस एंड हारमनी फाउंडेशन, भारत एवं पूर्व विभागाध्यक्ष, वाणिज्य एवं प्रबंधन विभाग, पं. सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान, भोपाल मध्य प्रदेश dr_ravindrashukla@rediffmail.com +91 9977466514

संपादक मण्डल सदस्य		
डॉ. मनोज कुमार सक्सेना वरिष्ठ आचार्य (शिक्षा) एवं प्रॉक्टर, हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला, (हिमाचल प्रदेश)	**डॉ. विनोद कुमार मिश्र** आचार्य एवं डीन, हिन्दी विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय (अगरतला)	**डॉ. आनंद प्रकाश त्रिपाठी** पूर्व आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर, (मध्य प्रदेश)
डॉ. श्री गोविंद पांडे आचार्य, शिक्षा शास्त्र विभाग, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, भोपाल केम्पस (मध्य प्रदेश)	**डॉ. दिवाकर सिंह राजपूत** आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, डॉ. हरिसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर (मध्य प्रदेश)	**डॉ. अमित कुमार जायसवाल** आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, बीएड विभाग, डीन-शिक्षा संकाय, श्रीदेव सुमन उत्तराखंड विश्वविद्यालय परिसर गोपेश्वर, चमोली(उत्तराखंड)
डॉ. महेश नारायण दीक्षित आचार्य, शिक्षा संकाय (IASE) गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद (गुजरात)	**डॉ. महेश शुक्ला** पूर्व आचार्य, समाजशास्त्र विभाग, शासकीय टी.आर.एस.उत्कृष्ट महाविद्यालय, रीवा (मध्य प्रदेश)	**डॉ. सुरेन्द्र पाठक** आचार्य, मध्यस्थ दर्शन, लोक जागृति विश्वविद्यालय, अहमदाबाद (गुजरात)
डॉ. अंजली अवधिया प्राचार्य, शास. कमला देवी महाविद्यालय, राजनांदगांव (छत्तीसगढ़)	**डॉ. भारती शुक्ला** सह आचार्य, हवाबाग महाविद्यालय, जबलपुर (मध्य प्रदेश)	**डॉ. मनीषा सक्सेना** सह आचार्य, डॉ. बी आर अंबेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय, महू (मध्य प्रदेश)
डॉ. राजीव जैन निदेशक, प्रबंधन विभाग, टूबा ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूट, भोपाल (मध्य प्रदेश)	**डॉ. अजय दुबे** पूर्व प्राचार्य, स्वामी राम हिमालयन योग विश्वविद्यालय, देहरादून (उत्तराखंड)	**डॉ. बिंदिया तातेर** सह आचार्य, मेडि-केप्स विश्वविद्यालय, इंदौर (मध्य प्रदेश)

उप संपादक	प्रबंध संपादक
डॉ. रामशंकर सहायक आचार्य, आई.आई.एम.टी. कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट, ग्रेटर नोएडा, ramwardha1986@gmail.com +91 9890631370	**लव चावड़ीकर** कार्यकारी प्रबंधक, आशा पारस फॉर पीस एंड हारमनी फाउंडेशन, भारत officeparasfoundation@gmail.com +91 9893950833

नोट:- व्यक्तिगत लेखकों द्वारा व्यक्त किए गए विचार उनके अपने हैं और जरूरी नहीं कि वे आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका/संपादक मण्डल को प्रतिबिंबित करते हों।

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-1, अंक-2 अक्टूबर-मार्च, 2025-26, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

विषय सूची

क्रम	विषयवस्तु	पृष्ठ क्र
	संपादकीय - *प्रो. आशा शुक्ला*	3-4
1	**मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद के आलोक में समग्र मानव विकास एवं परिवारमूलक स्वराज्य व्यवस्था** *देव प्रकाश शर्मा एवं सुरेंद्र पाठक*	5-16
2	**पंजाब में दलित अस्मिता और सामाजिक न्याय: डेरों की भूमिका का समाज-आध्यात्मिक विश्लेषण** *गुरपिंदर कुमार*	17-30
3	**मध्यस्थ दर्शन में सह-अस्तित्व और परिवार-मूलक व्यवस्था: समाधान, समृद्धि एवं न्याय का दार्शनिक विमर्श** *गौरीकांता साहू एवं सुनील छानवाल*	31-43
4	**सामाजिक उत्तरदायित्व की शिक्षा: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का एक महत्त्वपूर्ण आयाम** *महेश नारायण दीक्षित*	44-54
5	**प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय के संदर्भ में पुरातात्त्विक एवं ऐतिहासिक डिजिटल स्रोतों का विश्लेषणात्मक अध्ययन** *मनोज कुमार सक्सेना एवं आशीष कुमार*	55-68
6	**फुटपाथ बाजारों का धार जिले के अनुसूचित जनजाति समुदाय की आजीविका पर प्रभाव का अध्ययन** *मनीषा सक्सेना एवं मनोज कुमार गुप्ता*	69-80
7	**राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में पूर्व प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों के शारीरिक एवं शैक्षणिक विकास में आँगनवाड़ी केंद्रों की भूमिका एवं चुनौतियाँ** *पप्पू एवं शुभ्रा पी० काण्डपाल*	81-94
8	**तुलसीकृत रामचरितमानस में वनवासी समाज की सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक समरसता का विश्लेषण** *रामशंकर*	95-108
9	**अस्तित्ववाद और मानव जीवन की संपूर्णता: मध्यस्थ दर्शन एवं नई शिक्षा नीति 2020 के आलोक में एक सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन** *सोनिका निम एवं सुरेन्द्र कुमार पाठक*	109-121
10	**थारू जनजातीय लोक संस्कृति एवं लोक जीवन (बलरामपुर एवं सिद्धार्थनगर जनपद के विशेष संदर्भ में)** *वन्दना गुप्ता*	122-127
11	**आदिवासी विकास की अवधारणा, लक्ष्य और वर्तमान स्थिति** *वी. के. श्रीवास्तव*	128-135

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-1, अंक-2 अक्टूबर-मार्च, 2025-26, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

संपादकीय

आशा पारस फॉर पीस एंड हारमनी फाउंडेशन, भारत की स्थापना समाज में व्याप्त असमानताओं, लैंगिक भेदभाव, हिंसा, अशिक्षा एवं सामाजिक असंतुलन जैसी जटिल चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए की गई है। इस संस्था का मूल उद्देश्य एक ऐसे समाज का निर्माण करना है, जहाँ शांति, समानता, न्याय और सद्भाव की स्थापना हो सके। फाउंडेशन ने अपने आरंभ से ही यह संकल्प लिया कि वह विशेष रूप से महिलाओं, बच्चों, युवाओं तथा वंचित एवं हाशिए पर खड़े समुदायों के समग्र विकास हेतु शोध और जागरूकता के साथ निरंतर कार्य करेगा।

हमारा यह दृढ़ विश्वास है कि केवल नीतियों का निर्माण पर्याप्त नहीं होता, बल्कि वास्तविक परिवर्तन के लिए जमीनी स्तर पर जागरूकता, शिक्षा, शोध और प्रशिक्षण अत्यंत आवश्यक हैं। इसी दृष्टि से फाउंडेशन सामाजिक, शैक्षणिक, कानूनी, स्वास्थ्य एवं पर्यावरणीय क्षेत्रों में सक्रिय भूमिका निभा रहा है। महिला सशक्तिकरण, लैंगिक समानता, मानवाधिकार, आजीविका तथा वैश्विक शांति इसके प्रमुख कार्यक्षेत्र हैं, जिनके माध्यम से एक संवेदनशील और समतामूलक समाज की परिकल्पना को साकार करने का प्रयास किया जा रहा है।

फाउंडेशन द्वारा शोध और प्रकाशन को विशेष महत्व दिया गया है, क्योंकि ज्ञान का प्रसार ही स्थायी और सार्थक परिवर्तन का आधार बनता है। इसी उद्देश्य से *Asha Paras International Journal of Gender Studies (APIJGS) ISSN:2583-8687* तथा *Asha Paras International Multidisciplinary Research Journal (APIMRJ) ISSN:2584-2412* का शुभारंभ किया गया, ताकि राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शोधकर्ताओं को एक सशक्त मंच प्रदान किया जा सके और समकालीन सामाजिक मुद्दों पर गंभीर एवं सार्थक विमर्श को प्रोत्साहन मिले।

इसी क्रम में ***आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका (APVBSP) ISSN:3108-0294*** का प्रकाशन विशेष रूप से हिंदी भाषा में प्रारंभ किया गया। इसका उद्देश्य हिंदी भाषी शोधार्थियों एवं विद्वानों को अपनी मातृभाषा में अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करना है, क्योंकि भाषा की बाधा के कारण अनेक महत्वपूर्ण विचार और शोध मुख्यधारा तक पहुँच नहीं पाते। यह शोध-पत्रिका भारतीय संदर्भों, स्थानीय मुद्दों और जमीनी अनुभवों को सामने लाने का एक प्रभावी माध्यम बनकर उभर रही है।

वास्तव में, हिंदी माध्यम में शोध पत्रिका का प्रकाशन आज की एक महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है। यह उन व्यापक वर्गों तक ज्ञान पहुँचाता है, जो अंग्रेज़ी भाषा में सहज नहीं हैं। छात्र, शिक्षक, स्थानीय शोधकर्ता एवं नीति-निर्माता अपनी मातृभाषा में विषयों को अधिक गहराई से समझते और प्रभावी रूप से उपयोग में लाते हैं। इससे न केवल शोध का प्रभाव बढ़ता है, बल्कि स्थानीय समस्याओं के समाधान की दिशा में कार्य भी तेज़ होता है तथा हिंदी की डिजिटल और शैक्षणिक उपस्थिति सुदृढ़ होती है।

ISSN : 3108-0294
Asha Paras Vahuvishyak Bhartiya Shodh-Patrika
(BI-ANNUAL PEER-REVIEWED, ONLINE RESEACH JOURNAL)
आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका
(अर्द्धवार्षिक सहकर्मी-समीक्षित, ऑनलाइन शोध पत्रिका)
खंड-1, अंक-2 अक्टूबर-मार्च, 2025-26, apvbsp@gmail.com www.apvbsp.com

भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि विचार, संवेदना और पहचान की आधारशिला है। भारतीय भाषाओं को शिक्षा और तकनीक से जोड़ना उनके विकास के साथ-साथ हमारी सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण के लिए भी आवश्यक है। हिंदी माध्यम से इस शोध पत्रिका के प्रकाशन ने ऐतिहासिक रूप से जन-जागरूकता, शिक्षा और सांस्कृतिक सेतु का कार्य प्रारंभ किया है क्यों कि आज शोध पत्रिकाएँ उसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए नए ज्ञान को समाज के व्यापक वर्ग तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

भारत में लगभग 60–70 करोड़ लोग हिंदी को समझते हैं। ऐसे में हिंदी में किया गया शोध सीधे एक विशाल जनसमूह तक पहुँचता है, जिससे ज्ञान अधिक सुलभ और समावेशी बनता है। नई शिक्षा नीति (NEP 2020) भी भारतीय भाषाओं में उच्च शिक्षा और शोध को प्रोत्साहित करती है, और हिंदी शोध पत्रिकाएँ इस दिशा में महत्वपूर्ण योगदान देते हुए हिंदी को एक सशक्त शैक्षणिक भाषा के रूप में स्थापित कर रही हैं।

हिंदी में लेखन से स्थानीय समस्याओं, उदाहरणों और परंपराओं को स्वाभाविक रूप से अभिव्यक्ति मिलती है, जिससे विमर्श अधिक जमीनी, प्रासंगिक और प्रभावी बनता है। साथ ही, अनेक प्रतिभाशाली शिक्षक एवं शोधकर्ता, जो अंग्रेज़ी भाषा की बाधा के कारण पीछे रह जाते हैं, उन्हें हिंदी माध्यम एक सशक्त मंच प्रदान करता है। इससे उनकी प्रतिभा सामने आती है और शोध के क्षेत्र में उनका महत्वपूर्ण योगदान सुनिश्चित होता है।

संक्षेप में, हिंदी शोध पत्रिकाएँ ज्ञान की पहुँच, समावेशिता और भारतीय संदर्भों की गहराई को सुदृढ़ करती हैं तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की भावना के अनुरूप अखिल-भारतीय बौद्धिक संवाद को मजबूत बनाती हैं। हमें विश्वास है कि शोध पत्रिका का यह अंक नए ज्ञान-क्षितिजों को उद्घाटित करेगा, शोधकर्ताओं को प्रेरित करेगा और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुदृढ़ आधार तैयार करेगा।

समस्त संपादकीय टीम को हार्दिक साधुवाद।

प्रो. आशा शुक्ला
(प्रधान संपादक)

ISSN : 3108-0294